B.A Part - II L4(H) Date - 05.05.2020

प्र०: मध्यकालीन मैथिली गद्यक विकास पर टिप्पणी लिखू।

उत्तर: मैथिली साहित्यक विलक्षणता वा दुर्भाग्य कहल सकैछ जे मध्यकालमे ज्योतिरीश्वरक बाद विद्यापतिक कीर्तिलतामे मैथिली गद्यक प्रयोग भेल। मुदा गद्यमे कोनो साहित्यिक रचना नहि भेल। एकर कारण सम्भवतः विद्यापतिक गीतिक प्रभावमे मैथिली गद्यक विकास दबि गेल। दोसर कारण सम्भवतः विद्यापतिक गीतिक प्रभावमे मैथिली गद्यक विकास दबि गेल। दोसर कारण संस्कृत भाषाक प्रचुर मात्रामे प्रयोग मैथिल पंडित करैत छलाह। देशीभाषाकेँ हेय दृष्टिसँ देखैत छलाह। एहिकालमे एतुका विद्वतजन औचित्यक माध्यम सेहो संस्कृतकेँ बनौने रहलाह। एकर दूरगामी प्रभाव से मैथिली गद्यक विकास अवरुद्ध रहल। मिथिलामे मैथिल विद्वान नाटकक संवाद संस्कृत गद्य आ प्राकृतमे केलनि।

मैथिली गद्य साहित्यक रूप से किछु सामग्री उपलब्ध अछि जे असममे रचित अंकिया नाटक मे सन्निविष्ट गद्य संवाद आ नेपालमे मल्लवंशीय राजालोकनि द्वारा रचित अथवा हुनका सभक आश्रयमे रहि नाटकक रचना केनिहार विद्वान, पंडित।

Scanned with CamScanner

अंकिया नाटकक गीत ओ संवादमे गद्यक प्रयोग मैथिलेतर वैष्णव संतलोकनिक द्वारा प्रयोग कैल गेल अछि।
मध्यकालमे जे गद्य दस्तावेज, पत्र वा नाटकक रूपमे उपलब्ध अछि तकर किछु दृष्टान्त अछि –

क) दानपत्रक नमूना - महराज श्री श्री माधव सिंह बहादुर देवदेवानां सदासमर विजयिनां श्री मोहपाती सम्र्बिस नमस्कार आगां मौजे परसा परगना। जबदी मौजे मजकूर श्री गंगादत्त झा कों ब्रह्मोत्तर अमल मालुमस दर्मि सेयं दरखास्त कर देले जेसे मोहाजिम जनु होइअ अगहन बुदी नरोज सन 1186 साल मोकाम पटना।

ख) नेपाल के मैथिली नाटकमे प्रयुक्त गद्य - नहीं धन्यधान्य महराज रहन। कुल रहने उचित किछु तकरपर्णा मोजे कहइ छेअ।

ग) आसामक मैथिली नाटकमे प्रयुक्त गद्य - सीता हा हा विवर हनार कि कमाल मिलिल। हरि हरि रामस्वामी परम सुकुमार, नवीन वयसे, संग सोदर मात्र सहाय। ओहि परम निकरूणा दारुण राजा रावणक कैथे युद्धो जितिब? हा हा दैवविधा कोन अपराधे हामाक कैल।

रानी मिश्रा
मैथिली विभाग
D.M. College, Pandaul